ISSN No. 2231-0045 VOL.II* ISSUE-IV*MAY-2014
Periodic Research

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

कमलेश यादव
असि0 प्रोफेसर
विभाग बी0 एड0
शिवलोक महिला महाविद्यालय,
मेहरबान सिंह पुरवा, कानपुर

सारांश

शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँचता है, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब व्यक्ति किसी लक्ष्य पर पहुँचने के लिये प्रयासरत होता है, परन्तु प्रारम्भिक प्रयासों में उसे सफलता नहीं मिलती, तब व्यक्ति के लिये लक्ष्य तक पहँचना एक समस्या हो जाती है। जब व्यक्ति मार्ग में आने वाली बाधाओं पर विजय प्राप्त करके अपने लक्ष्य पर पहुँच जाता है तब कहा जाता है कि उसने अपनी समस्या समाधान कर लिया है। अतः समस्या समाधान से तात्पर्य मार्ग में आने वाली कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके लक्ष्यों का प्राप्त कर लेने से है। छात्रों को रोजमर्रा की जिन्दगी में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इन कठिनाइयों या समस्याओं का समाधान वे सही सोच व सही तर्क से कर सकते हैं। शिक्षा देते समय छात्र–छात्राओं की समस्याओं की जानकारी होने से उन्हें शिक्षण देने में सुगमता होती है। छात्र–छात्राओं की जो समस्याएँ होती है जिसका समाधान सिर्फ उनके शिक्षक ही कर सकते है। बी0 एड0 के छात्र–छात्राओं में समस्या समाधान के महत्व को देखते हुए उसका अध्ययन अति आवश्यक है। अतः शोधकर्ता ने चार स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय के सौ छात्र व सौ छात्राओं को न्यादर्श रूप में लेकर उसकी समस्या समाधान योग्यता का परीक्षण किया निष्कर्ष में पाया गया कि स्ववित्त – पोषित महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा समस्या समाधान की अधिक योग्यता पाई गई। अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समस्या योग्यता में भी अन्तर पाया गया परन्तु इस संदर्भ में छात्रों में यह योग्यता छात्रओं की अपेक्षा कुछ अधिक देखी गयी। अतः उपरोक्त तथ्य के आधार पर ही यह भी कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राओं की समाधान योग्यता में भी सार्थक अंतर पाया गया।

मुख्य शब्द : कठिनाइयों, स्ववित्तपोषित, अनुदानित, प्रशिक्षण, लक्ष्य

प्रस्तावना

शिक्षा समाज की वह प्रक्रिया है जिसकी प्रत्येक मनुष्य को आवश्यकता होती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का शारीरिक मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँचता है, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब व्यक्ति किसी लक्ष्य पर पहुँचने के लिये प्रयासरत होता है, परन्तु प्रारम्भिक प्रयासों में उसे सफलता नहीं मिलती, तब व्यक्ति के लिये लक्ष्य तक पहुँचना एक समस्या हो जाती है। जब व्यक्ति मार्ग में आने वाली बाधाओं पर विजय प्राप्त करके अपने लक्ष्य पर पहुँच जाता है तब कहा जाता है कि उसने अपनी समस्या का समाधान कर लिया है। अतः समस्या समाधान से तात्पर्य मार्ग में आने वाली कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके लक्ष्यों का प्राप्त कर लेने से है।

समस्या समाधान तब ही होता है जब लक्ष्य उद्देश्यपूर्ण तथा व्यक्ति के लिये महत्वपूर्ण होता है। समस्या समाधान में व्यक्ति अपनी चिन्तन व तर्क शक्तियों का प्रयोग करने के साथ–साथ व्यवस्थित सोपानों का अनुसरण करना होता है। समस्या समाधान व्यवहार में स्पष्ट रूप से जानबूझ कर गम्भीरता के साथ प्रयास करना होता है अथवा उनके साथ समायोजन करता है। समस्या समाधान के अन्तर्गत प्राणी अपने लक्ष्य में आ रहे अवरोधों को या तो दूर करता है। निःसंदेह समस्या समाधान से व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है तथा उसका समायोजन अनुकूलतम होता है एवं व्यक्ति अधिक प्रसन्नता के साथ जीवन जीने

में सक्षम होता है। समस्या समाधान से व्यक्ति समाज व राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान करने में समर्थ होता है।

अध्ययन की आवश्यकता

छात्रों को रोजमर्रा की जिन्दगी में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इन कठिनाइयों या समस्याओं का समाधान वे सही सोच व सही तर्क से कर सकते हैं। अगर कोई औसत बुद्धि का है तो वह सिर्फ अपनी रोज में होने वाली समस्याओं का समाधान कर सकता है और जो औसत बुद्धि से भी कम बुद्धि वाला होगा वह अपनी किसी भी समस्या का समाधान नहीं कर पायेगा। जो बुद्धिमान होगा वह अपनी सभी कठिन समस्याओं का समाधान कर सकेगा। शिक्षा देते समय छात्र–छात्राओं की समस्याओं की जानकारी होने से उन्हें शिक्षण देने में सुगमता होती है। छात्र–छात्राओं की जो समस्याएँ होती है जिसका समाधान सिर्फ उनके शिक्षक ही कर सकते है। इसी प्रकार बी0 एड0 के छात्र–छात्राओं की भी कई समस्याएँ होती हैं। वह युवा होते हैं इसलिए वह अपने भविष्य में आने वाली समस्याओं का सामना अकेले नहीं कर सकते है। इन समस्याओं का समाधान करना आवश्यक है क्योंकि वे हमारे भावी शिक्षक है। एक अध्यापक को बी0 एड0 प्रशिक्षण द्वारा ही सजाया एवं सवॉरा जाता है और उसे इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन भली भाँति कर सके। इस प्रकार बी0 एड0 के छात्र–छात्राओं में समस्या समाधान के महत्व को देखते हुए उसका अध्ययन अति आवश्यक है। इसलिए इस विषय में शोध किया गया है।

उद्देश्य प्रस्तुत शोध प्रपत्र के निम्न उद्देश्य हैं

(क) स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन करना।
(ख) स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण महाविद्यालय की छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन करना।
(ग) अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन करना।
(घ) अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय की छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन करना।
(ड) स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय के बी0 एड0 के छात्र/छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना

(अ) स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर नहीं होता है।
(ब) अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर नहीं होता है।
(स) स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर नहीं होता है।
(द) स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर नहीं होता है।

समस्या कथन

''स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी0 एड0 छात्र/छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन''

समस्या कथन में प्रस्तुत शब्दावली का परिभाषीकरण

स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण महाविद्यालय वित्तविहीन बी0 एड0 प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किया है,

अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालय सरकारी बी0 एड0 प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किया है।

बी0 एड0 छात्र/छात्रायें

उन छात्र/छात्राओं का चयन किया गया है जो बी0 एड0 प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके है और बी0 एड0 प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

समस्या समाधान योग्यता –

समस्या समाधान तर्क का एक आवश्यक अंग है यह स्पष्ट किया जा चुका है कि तर्क का लक्ष्य किसी समस्या समाधान का ही होता है।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य बी0 एड0 छात्र/छात्राओं के कानपुर नगर के चार महाविद्यालयों तक सीमित होगा। जिसमें दो महाविद्यालय स्ववित्तपोषित व दो अनुदानित महाविद्यालय है।

(य) महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय
(र) डी0 ए0 वी0 प्रशिक्षण महाविद्यालय
(ल) दयानन्द महिला महाविद्यालय
(व) अभिनव शिक्षण सेवा संस्थान

प्रस्तुत लघु शोध का न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता ने उचित परिणामों की प्राप्ति के लिए संभाव्यता न्यादर्श की संयोगिक या यादृच्छिक प्रतिचयन विधि को चुना क्योंकि इसमें हर इकाई के चयन होने की सम्भावना समान होती है।

विद्यालयों का चयन

लाटरी विधि के आधार पर शोधकर्ता ने सर्वप्रथम कानपुर शहर के समस्त (जो महाविद्यालय शोधकर्ता के घर के आस पास है) महाविद्यालयों की सूची बनाई तथा उनके नाम पर्चियों में लिखकर सभी पर्चियों को मिलाकर उनमें से दो पर्ची बालिका महाविद्यालयों की तथा दो बालकों के महाविद्यालयों की निकाली व चार महाविद्यालयों का चयन किया।

इसी प्रकार शोधार्थी ने बी0 एड0 कर रहे छात्र/छात्राओं की सूची बनाई और क्रम से चार छात्र या छात्राओं को चुनकर पॉचवे को छोड़ दिया इस प्रकार वांछित इकाइयों का चयन कर लिया।

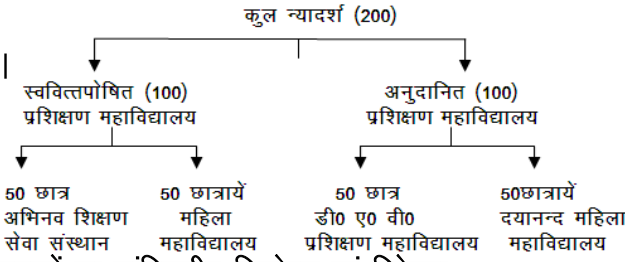

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचना –

महाविद्यालयों के समस्या समाधान के अध्ययन में जो आँकड़े प्राप्त हुए है उनके आधार पर अंकों का मध्यमान (M) प्रमाणिक विचलन (SD) तथा t मान अग्रांकित है।

सारणी 1

स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व t मान की गणना

क0सं0	चर संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि	t मान
1	छात्राए 50	17.2	3.18	.39	9.02
2	छात्र 50	13.68	3.13		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित बी0 एड0 महाविद्यालयों की छात्र छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का t मान 9.02 है जो कि मुक्तांश 98 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर t के तालिका मान से अधिक है। अतः मध्यमानों के बीच का अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार होती है अतः हम कह सकते है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर होता है।

सारणी 2

अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व t मान की गणना

क0सं0	चर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि	t मान
1	छात्राएं	50	14.2	3.21	.46	4.56
2	छात्र	50	16.3	3.57		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्र छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का t मान 4.56 है जो कि मुक्तांश 98 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर t के तालिका मान से अधिक है। अतः मध्यमानों के बीच का अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार होती है अतः हम कह सकते है कि अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर होता है।

सारणी 3

स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व t मान की गणना

क0 सं0	चर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि	t मान
1	स्ववित्त–पोषित महाविद्यालय (छात्राएं)	50	14.2	3.21	.46	4.56
2	अनुदानित महाविद्यालय (छात्राएं)	50	16.3	3.57		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का t मान 7.5 है जो कि मुक्तांश 98 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर t के तालिका मान से अधिक है। अतः मध्यमानों के बीच का अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अतः हम कह सकते है कि स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर होता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है।

1. स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा समस्या समाधान की अधिक योग्यता पाई गई।
2. अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समस्या योग्यता में भी अन्तर पाया गया परन्तु इस संदर्भ में छात्रों में यह योग्यता छात्राओं की अपेक्षा कुछ अधिक देखी गयी।
3. उपरोक्त तथ्य के आधार पर ही यह भी कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित व अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राओं की समाधान योग्यता में भी सार्थक अंतर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एन्ड्यू टी0 – समस्या समाधान व शिक्षा, अकेडमिक प्रेस
2. सेलवुड पी – चिंतन कौशल के विकास में समस्या समाधान की भूमिका। तकनीकी शिक्षक 49 (3), 3 – 10.
3. Birch W, (1986) Towards a model for problem base of learning, Studies to Higher Education 11 (1) 73 – 82
4. Gagne R.M. (1985). The conditions of Learning and Theory of Instruction (4th ed.) Newyork, Holt, Rinehart and Winston.
5. Hutchinson P, (1987) Problem solving in British corajt, design and technology education Dissertation Abstracts International, 48 10 – A, 2007.